विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग नवम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:-०६/०६/२०२० पाठ: षष्ठ: भ्रान्तो बाल:

भ्रान्त: कश्चन् बाल: पाठशाला गमनवेलायां क्रीडितुं निर्जगाम् ।किन्तु तेन सह केलिभि:कालं क्षेप्तुं तदा कोऽपि न वयस्येषु उपलभ्यमान: आसीत् ।यतस्ते सर्वेऽपि पूर्वदिन पाठान् स्मृत्वा विद्यालयगमनाय त्वरमाणा बभूवु: ।तन्द्रालुर्बालो लज्जया तेषां दृष्टिपथमपि परिहरन्नेकाकी किमप्युद्यानं प्रविवेश ।स चिन्तयामास-विरमन्त्वेते वराका: पुस्तकदासा:।अहं पुनरात्मानं विनोदयिष्यामि ।

शब्दार्था:-कश्चन् -कोई , भ्रान्त:-भ्रमित , बेलायाम् -समय पर , यत:-क्योंकि

क्रीडितुं -खेलने के लिए निर्जगाम्-निकल गया , केलिभि:-खेल द्वारा , कालंक्षेप्तुम्-समय बिताने के लिए

वयस्येषु -मित्रों में , उपलभ्यमान् -उपलब्ध , स्मृत्वा- याद करके त्वरमाणा -शीघ्रता से तैयार , तन्द्रालु:-आलसी , परिहरन्-बचता हुआ , एकाकी- अकेला , प्रविवेश- घुस गया ,चिन्तयामास -सोचा , विरमन्तु -रुकें

वराका:-बेचारे,आत्मानम् -अपने आपको ,पुस्तकदासा-पुस्तकों के दास, विनोदयिष्यामि -मैं मनोरंजन करुंगा

अर्थ-कोई भ्रमित बालक पाठशाला जाने के समय खेलने के लिए चला गया ,किन्तु उसके साथ खेलके द्वारा समय बिताने के लिए कोई भी मित्र उपलब्ध नही था ।वे सभी पहले दिन के पाठों को याद करके विद्यालय जाने की शीघ्रता से तैयारी कर रहे थे।आलसी बालक लज्जावश उनकी दृष्टि से बचता हुआ अकेला ही उद्यान में प्रविष्ट हो गया ।उसने सोचा -ये बेचारे पुस्तक के दास वहीं रुके, मैं तो अपना मनोरंजन करुंगा।